2 जून 2007, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक
ए-४, बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

समताभाव की प्राप्ति का एक मात्र उपाय वृत्ति का स्वभाव सन्मुख होना ही है।

ह्न बारह भावना : एक अनुशीलन, पृ. २७

वर्ष : 30, अंक : 5 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जून (प्रथम), 2007 प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

वर्तमान स्थिति के सम्बन्ध में...

हमारी मंगल भावना है कि आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के पावन प्रयासों से भगवान महावीर का जो वीतरागी तत्त्वज्ञान आज हमें उपलब्ध है, उसके माध्यम से हम सब अपना कल्याण तो करें ही, साथ में उसे जन-जन तक पहुँचाने का सशक्त प्रयास भी करें।

यद्यपि हम सब के प्रयासों से तैयार विद्वानों का एक बहुत बड़ा समुदाय आज हमें उपलब्ध है और उनके माध्यम से अनेक संस्थाओं द्वारा यह प्रयास हो ही रहा है; तथापि व्यर्थ के भ्रम न फैलें ह्न इस भावना से वर्तमान सन्दर्भ में हम स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि हमारा किसी से भी वैर-विरोध नहीं है, जो भी व्यक्ति या संस्था वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में संलग्न है, उसके प्रति हमारा प्रमोदभाव है। उन्हें हमारा अन्तर की गहराईयों से मंगल आशीर्वाद है। हम उन्हें प्रतिद्वन्दी के रूप में नहीं देखते, सहयोगी के रूप में देखते हैं। हम उनका सहयोग चाहते हैं और उन्हें पूरा-पूरा सहयोग देना चाहते हैं।

जो भी व्यक्ति या संस्था हमें सच्चे दिल से बुलाती रही है और बुलायेगी पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के कार्यों की मुख्यता प्रदान करते हुये हमें अनुकूलता होने पर उनके यहाँ बिना किसी भेदभाव के अवश्य जायेंगे।

न तो हम किसी से प्रतिबद्ध है और ना ही हमारा ऐसा संकल्प है कि हम वहाँ नहीं जायेंगे। उक्त सन्दर्भ में हम सदा से स्वयं ही निर्णय करते रहे हैं और भविष्य में भी ऐसा ही करेंगे।

आध्यात्मिकसत्पुरुष कानजीस्वामी के उपस्थिति काल से आत्मकल्याण के साथ-साथ जगत् के हित के लिये जिनवाणी माँ की सेवा, स्वाध्याय, प्रवचन, लेखन और प्रकाशन के माध्यम से तत्त्वप्रचार के कार्य हम जिसप्रकार बिना दबाव के करते आ रहे हैं, उसीप्रकार आगे भी करते रहेंगे। इसीप्रकार वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिये अबतक जिसप्रकार सामाजिक सम्पर्क करते आ रहे हैं आगे भी करते रहेंगे।

आज तक जो हमसे असहमत रहे, उनसे भी हमने विरोधभाव नहीं रखा और न भविष्य में रखेंगे। उनके प्रति माध्यस्थभाव धारण करेंगे। उन्हें जो कुछ करना है करें, हम उसमें उलझेंगे नहीं। उनके द्वारा हमारी असत् आलोचना किये जाने पर भी उनका प्रतिवाद करने के लिये न तो हमारे पास समय है और न हम उसमें शक्ति का अपव्यय करना चाहते हैं।

हमसे असहमत लोगों से भी हम अपेक्षा रखते हैं कि वे भी व्यर्थ के विवादों में न उलझें और चक्रवर्ती की सम्पदा से भी मूल्यवान जीवन के शेष समय का सदुपयोग आत्मकल्याण और वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में लगाकर सार्थक करें।

अधिक क्या कहें ! यह मनुष्य भव बार-बार नहीं मिलता। इसे यों ही न गवाँ दे। **ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल**

विद्वान व समाज ध्यान दें !

दसलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर की ओर से भेजे जानेवाले विद्वानों का निर्णय 5 अगस्त से 14 अगस्त, 07 तक जयपुर में लगनेवाले शिविर के समय ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री करेंगे; अत: इच्छुक समाज जल्दी से जल्दी निमंत्रण भेजें और विद्वान वर्ग भी अपनी स्वीकृति तत्काल भेजें। **ह्न डॉ. भारिल्ल**

सम्पादकीय –

समाधि और सल्लेखना

५

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

आत्मघात का स्वरूप स्पष्ट करते हुए आ. अमृतचन्द लिखते हैं ह्न

यो हि कषायाऽविष्टः कुम्भकजलधूमकेतुविषशस्त्रैः।
व्यपरोपयति प्राणान् तस्य स्यात्सत्यमात्मवधः ।।

अर्थात् जो जीव क्रोधादि कषायसंयुक्त होकर श्वास–निरोध करके अर्थात् फाँसी लगाकर, जल में डूबकर, अग्नि में जलकर, विष–भक्षणकर या शस्त्रादि के द्वारा अपने प्राणों का वियोग करता है; उसको सदाकाल अपघात का दोष लगता है।

ह्न पुरुषार्थसिद्धयुपाय, श्लोक १७७–१७८

सल्लेखना की विधि बताते हुए आचार्य समन्तभद्र लिखते हैं ह्न

स्नेहं वैरं संगं परिग्रहं चापहाय शुद्धमना।
स्वजनं परिजनमपि च क्षान्त्वा क्षमयेत् प्रियैर्वचनैः ।।
आलोच्यसर्वमेनः कृतकारितमनुमतं च निर्व्याजम्।
आरोपयेन्महाव्रतमामरणस्थायि निःशेषम् ।।

अर्थात् स्नेह, बैर, परिग्रह को छोड़कर शुद्ध होता हुआ प्रिय वचनों से अपने कुटुम्बियों और चाकरों से भी क्षमा करावे और आप भी सबको क्षमा करें। छलकपट रहित होकर, कृत–कारित–अनुमोदना सहित किये हुए समस्त पापों की आचोलना करके मरणपर्यंत उपचरित महाव्रतों को धारण करे। क्रम–क्रम से आहार को छोड़कर दुग्ध–छाछ को बढ़ावे और पीछे दुग्धाभिषेक को छोड़कर गरम जल को बढ़ावे। तत्पश्चात् गरम जलपान का भी त्याग करके और शक्त्यानुसार उपवास करके पञ्च नमस्कार मंत्र को मन में धारण करता हुआ शरीर को छोड़े।

ह्न रत्नकरण्ड श्रावकाचार, श्लोक १२४–१२५

''आचार्य वसुनन्दि लिखते हैं ह्न जो श्रावक, वस्त्रमात्र परिग्रह को रखकर और अवशिष्ट समस्त परिग्रह को छोड़कर अपने ही घर में अथवा जिनालय में रहकर गुरु के समीप मन–वचन–काय से अपनी भले प्रकार आलोचना करके दुग्ध जलपान आदि के सिवाय शेष तीन प्रकार के (खाद्य, स्वाद्य और लेह्य आहार का) त्याग करता है, उसे उपासकाध्ययन सूत्र में सल्लेखना नाम का चौथा शिक्षाव्रत कहा गया है।''

ह्न वसुनन्दि श्रावकाचार, गाथा २७१–२७२

प्रश्न ह्न समाधिमरण धारण करने की क्या प्रक्रिया है?

उत्तर ह्न अपनी आयु निकट जानकर समाधि साधक समाधिमरण करने का निर्णय लेते हैं। एतदर्थ वे सर्वप्रथम अपने गुरु से पूछते हैं, पश्चात् मन–वचन–काय की शुद्धतापूर्वक समस्त श्रावकों एवं मुनिसंघ से क्षमायाचना करते हैं और सबको क्षमा प्रदान करते हैं। तत्पश्चात् दो अथवा तीन मुनियों के साथ उस संघ का त्याग करके अन्य संघ में जाते हैं; क्योंकि यदि उसी संघ में रहेंगे तो पूर्व परिचय के कारण संघ के साधुओं से मोह होना सम्भव है।

इसप्रकार वे समाधिधारक योग्य निर्यापक की शरण में पहुँचकर समाधिमरण के लिए निवेदन करते हैं। वे निर्यापक भी उचित परीक्षापूर्वक आत्मा की शुद्धि के लिए साधक के दोषों की आलोचना (समीक्षा) करते हैं। एवं उन दोषों का निराकरण कराते हैं। साधक दोषों को बतलाने में किसी प्रकार की मायाचारी नहीं करते हुए आचार्यदेव द्वारा प्रदत्त प्रायश्चित्त को धारण करते हैं।

यह सब प्रक्रिया सम्पन्न होने पर आचार्यदेव, उन साधकों को समाधिमरण का स्वरूप बतलाते हुए समाधिमरण में उत्साहित करते हैं।

ह्न मूलाचार प्रदीप, गाथा २६४७ से २६६६

प्रश्न ह्न समाधिधारक किस प्रकार का चिन्तवन करके अपने परिणामों को दृढ़ रखते हैं?

उत्तर :ह्न साधक चिन्तवन करते हैं कि ह्न दर्शन और ज्ञानरूप उपयोग लक्षणवाला मैं एक हूँ, सदा नित्य हूँ, जन्म–जरा–मृत्यु से रहित हूँ, परद्रव्यों से भिन्न हूँ और अनन्त गुणों का भण्डार हूँ। अन्य दूसरे जितने भी द्रव्य, देह, इन्द्रिय, लक्ष्मी और गृहादि अचेतन पदार्थ हैं तथा स्वजन–परिजन आदि चेतनप्राणी हैं, वे सब मेरे से सर्वथा भिन्न एवं परस्वरूप हैं।

मैं सिद्ध हूँ, सिद्धरूप हूँ, गुणों से सिद्ध के समान हूँ, महान हूँ, त्रिलोक के अग्रभाग पर निवास करनेवाला हूँ, अरूप हूँ, असंख्यातप्रदेशी हूँ। मैं शुद्ध हूँ, मैं निःकर्मा हूँ, मैं भवातीत हूँ, संसार को पार कर चुका हूँ, मैं मन–वचन–काय से दूर हूँ, मैं अतीन्द्रिय अर्थात् इन्द्रियों से परे हूँ, मैं क्रिया रहित अर्थात् निष्क्रिय हूँ, मैं अमूर्त्त हूँ, मैं ज्ञानरूप हूँ, मैं अनन्त दर्शन, अनंत ज्ञान, अनन्त वीर्य और अनन्त सुख का धारक हूँ, मैं सर्वदर्शी हूँ।

मैं परमात्मा हूँ, प्रसिद्ध हूँ, बुद्ध हूँ, स्वचैतन्यात्मक हूँ, मैं परमानन्द का भोक्ता हूँ, मैं सर्वप्रकार के कर्म–बन्धनों से रहित हूँ, अखण्डरूप हूँ, निर्ममत्वरूप हूँ, उदासीन हूँ, ऊर्जस्वी हूँ, तेजस्वी हूँ, मैं निर्विकल्प हूँ, मैं आत्मज्ञ हूँ, मैं केवलदर्शन और केवलज्ञानरूप दो नेत्रों का धारक हूँ, मैं स्वसंवेदनगम्य हूँ, मैं सम्यग्ज्ञानगम्य हूँ।

मैं सनातन हूँ, मैं सिद्धों के अष्ट गुणों का धारक हूँ, मैं निश्चयतः जगज्ज्येष्ठ हूँ, मैं जिन हूँ, परमार्थ से मैं ही स्वयं ध्यान करने के योग्य हूँ।

इसप्रकार अपने उत्कृष्ट आत्मस्वरूप की भावना द्वारा अध्यात्मवेत्ता क्षपक स्वात्मध्यान में लीन रहता है।

ह्न समाधिमरणोत्साहदीपक, गाथा १५०–१५१

प्रश्न :ह्न सल्लेखना की भावना जीवनपर्यन्त करना उपयोगी है अथवा मात्र अन्तिम समय में सल्लेखना कार्यकारी है?

उत्तर :ह्न मैं मरण काल में अवश्य ही शास्त्रोक्त विधि से समाधिमरण करूँगा ह्न इस प्रकार सदैव समाधि की भावना करके मरणकाल प्राप्त होने के पहले ही सल्लेखनाव्रत ले लेना चाहिए।

ह्न पुरुषार्थसिद्धिउपाय, गाथा–१७६

प्रश्न :ह्न सल्लेखना स्वयं की मर्जी से लेना चाहिए या शास्त्रों में विधान है, इसलिए उसे लेना आवश्यक है?

उत्तर :ह्न इस सम्बन्ध में तत्त्वार्थसूत्रकार ने मनोवैज्ञानिक समाधान किया है। वे कहते हैं ह्न **मारणान्तिकीं सल्लेखनां जोषिता** अर्थात् व्रती साधक स्वेच्छा से मरण समय प्रीतिपूर्वक सल्लेखना स्वीकार करता है। यहाँ पर सूत्र में प्रयुक्त 'जोषिता' शब्द का केवल 'सेवन करना' अर्थ नहीं लिया गया है, बल्कि प्रीतिपूर्वक सेवन करना अर्थ किया है; क्योंकि प्रीति के बिना सल्लेखना नहीं करायी जाती, किन्तु प्रीति के रहने पर स्वयं ही सल्लेखना ग्रहण करता है।

शास्त्रों का विधान तो मात्र मार्गदर्शक है, जो व्यक्ति स्वयं अपने उत्साह से सल्लेखना धारण करेगा, पूरा लाभ से उसे ही मिलेगा।

ह्न सर्वार्थसिद्धि, ७/२२

सल्लेखना के अतिचार : ह्न

जीवितमरणाशसामित्रानुरागसुखानुबन्धनिदानानि।

अर्थात् जीविताशंसा, मरणाशंसा, मित्रानुराग, सुखानुबन्ध और निदान ह्न ये सल्लेखना के पाँच अतिचार हैं। **ह्न तत्त्वार्थसूत्र, ७/३७**

१. सल्लेखना धारण करके जीने की इच्छा करना **जीविताशंसा** नामक अतिचार है।

२. सल्लेखना धारण करके रोगादि के उपद्रव होने पर आकुल–व्याकुल होकर शीघ्र मरने की इच्छा करना **मरणाशंसा** नामक अतिचार है।

३. सल्लेखना धारण करने के पश्चात् जिनके साथ में रहकर अनेक प्रकार के खेलों में मस्त रहा उन मित्रों का स्मरण करना **मित्रानुराग** नामक अतिचार है।

४. सल्लेखना धारण करके पूर्वकाल में भोगे हुए भोग शयन–क्रीड़ा आदि का चिन्तवन करना **सुखानुबन्ध** नामक अतिचार है।

५. सल्लेखना के काल में इस प्रकार इच्छा करना कि आगामी काल में विषय–भोगों की प्राप्ति हो, वह **निदान** नामक अतिचार है।

ह्न अर्थप्रकाशिका ७/३७, पृष्ठ २८६

सल्लेखना का महत्व और फल: ह्न

प्रश्न ह्न सल्लेखना का महत्त्व और उसका फल क्या है?

उत्तर ह्न सल्लेखना के धारक स्वर्गों में अनुत्तर विमान में भोग भोगकर वहाँ से आकर उत्तम मनुष्यभव में जन्म धारणकर सम्पूर्ण ऋद्धियों को प्राप्त करते हैं। बाद में जिनधर्म के अनुसार तप आदि का पालन करते हैं। फिर शुक्ललेश्या की प्राप्ति करके वे आराधक **शुक्लध्यान से संसार का नाश** करते हैं और कर्मरूपी कवच को छोड़कर सम्पूर्ण क्लेशों का नाश कर मुक्त होते हैं। **ह्न भगवती आराधना, गाथा १९४२–१९४५**

जिसने सल्लेखना धारण करके कषायों को कृश किया है, समताभाव धारण करके वीतरागी धर्मरूपी अमृत पान किया है ह्न ऐसा धर्मात्मा साधक असंख्यातकाल तक स्वर्ग का महान ऋद्धिधारी देवपना भोगकर फिर मनुष्यों में उत्तम राजादि के वैभव पाकर, पश्चात् उन संसार–शरीर–भोगों से विरक्त होकर शुद्ध संयम अंगीकार करके निःश्रेयसरूप निर्वाण का आस्वादन करता है, अनुभव करता है।

तात्पर्य यह है कि स्व शुद्धात्मा की आराधना अर्थात् निर्मल रत्नत्रय परिणति का होना समाधि है और उस समाधिपूर्वक देह का परित्याग करना समाधिमरण है। **ह्न जैनेन्द्र सि.कोश, भाग–४, पृष्ठ ३३७ (क्रमशः)**

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

कोटा (राज.) : यहाँ गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रभावना योग से इन्द्रविहार कॉलोनी में निर्मित श्री सीमन्धर जिनालय का चतुर्थ वार्षिकोत्सव दिनांक 6 से 8 मई, 07 तक आदरणीय बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर 170 तीर्थंकर मण्डल विधान का आयोजन पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री, रहली के निर्देशन में किया गया। साथ ही पण्डित राकेशजी शास्त्री अलीगढ़ के प्रासंगिक प्रवचनों का लाभ मिला।

वेदी प्रतिष्ठा सानन्द सम्पन्न

खैरागढ़ (राजनांदगाँव–छ.ग.) : यहाँ स्थानीय दि. जैन मन्दिर में 23 अप्रैल,07 को वेदी प्रतिष्ठा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन विदिशा, पण्डित विमलदादाजी झांझरी उज्जैन, पण्डित राजेन्दकुमारजी जबलपुर, पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर एवं स्थानीय विद्वान पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, पण्डित जिनेशकुमारजी जैन के साथ सोनगढ़ से पधारी ब्रह्मचारी बहनों का भी समागम प्राप्त हुआ।

विधि–विधान के संपूर्ण कार्य बाल ब्र. पण्डित अभिनन्दनजी शास्त्री, खनियांधाना के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

शुभ कामना !

बेलगाम (कर्नाटक) : यहाँ भरतेश एज्युकेशन ट्रस्ट बेलगांव की ओर से 12 से 22 अप्रैल तक आयोजित संस्कार शिक्षण शिविर में गीतेश पार्श्वनाथ बखेडी को संस्कार रत्न पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र प्रदान किया गया। ज्ञातव्य है कि आपने महाविद्यालय में विशेष योग्यता सहित परीक्षा उत्तीर्ण की तथा सामाजिक कार्यों में भी अपना सहयोग दिया। हम आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं। **ह्न महावीर बखेड़ी**

41 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

*** देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे हुये 800 आत्मार्थी ज्ञानयज्ञ में सम्मिलित। * प्रात: 5 से रात्रि 10 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से 17 घण्टे अविरल ज्ञानगंगा प्रवाहित। * शिविर में 39 विद्वानों का समाज को लाभ । * बालबोध एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण में 145 एवं बाल कक्षाओं में 90 विद्यार्थी सम्मिलित । * शिविर में 60 हजार, 872 रुपयों का सत्साहित्य एवं 1190 घण्टों के सी.डी. व कैसिट्स बिके।**

देवलाली (नासिक–महा.) : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली द्वारा आयोजित 41 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर दिनांक 8 से 25 मई, 07 तक सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

उद्घाटन समारोह ह्न शिविर का उद्घाटन मंगलवार, दिनांक 8 मई, 2007 को श्री मुकुंदभाई खारा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

झण्डारोहण श्री प्रवीणभाई पोपटलाल वोरा, मुम्बई एवं शिविर का उद्घाटन श्री विपुलभाई हितेनभाई मोटाणी परिवार, मुम्बई ने किया।

मुख्यअतिथि श्री नितिनभाई ताराचन्दजी शाह मुम्बई, श्री नितिनभाई चिमनलालजी शाह मुम्बई एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुमनभाई दोशी राजकोट, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल आदि समस्त विद्वानगण मंचासीन थे।

उद्घाटन समारोह में श्रीमान मुकुन्दभाई खारा ने आगन्तुक विद्वद्गण एवं अतिथियों का स्वागत करते हुये पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली का परिचय दिया तथा यह शिविर देवलाली में सातवीं बार लगाने की स्वीकृति प्रदान करने के लिये पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का आभार व्यक्त किया। शिविर का महत्त्व बताते हुए उन्होंने इसे तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार के लिये अत्यधिक महत्त्वपूर्ण बताया।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित गतिविधियों का परिचय देते हुये पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा ने गुरुदेवश्री द्वारा प्रचारित तत्त्वज्ञान के भविष्य में भी प्रचार–प्रसार की भरपूर संभावना बताई तथा इस सम्बन्ध में देश में चल रहे विभिन्न कार्यों का परिचय दिया।

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने शिविरों के मूल प्रेरणास्रोत पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के योगदान का स्मरण करते हुये शिविर का परिचय एवं वर्तमान युग में उसकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

उद्घाटन सभा का संचालन पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री एवं आभार प्रदर्शन श्री सुमनभाई दोशी ने किया। समारोह से पूर्व प्रात: मंगल कलश शोभायात्रा पूर्वक मानस्तंभ के समक्ष देव–शास्त्र–गुरु पूजन हुई तथा गुरुदेवश्री के सी. डी. प्रवचन का लाभ मिला।

प्रात: कालीन प्रवचन ह्न प्रतिदिन प्रात: आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचन के बाद अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनसार पर मार्मिक प्रवचन हुये।

रात्रि कालीन प्रवचन ह्न पं. अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पं. राजेन्द्रजी जबलपुर, पं. प्रदीपजी झांझरी उज्जैन के मार्मिक प्रवचनों के पूर्व पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, पं. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' भोपाल, पं. शिखरचन्दजी विदिशा, पं. कस्तूरचन्दजी भोपाल, डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पं. सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, पं. पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर, पं. परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पं. अभयजी शास्त्री खैरागढ़ के विभिन्न विषयों पर प्रवचन हुये।

दोपहर की व्याख्यानमाला में ह्न पं. कमलेशजी शास्त्री मौ, पं. आलोकजी शास्त्री कारंजा, पं. सुरेशजी शास्त्री गुना, पं. नन्दकिशोरजी शास्त्री काटोल, पं. रमेशचन्दजी शास्त्री जयपुर, पं. अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पं. संजयजी राऊत कचनेर, पं. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, पं. नरेन्द्रजी जैन जबलपुर, पं. संजयजी सेठी जयपुर, पं. स्वानुभवजी शास्त्री मुम्बई, पं. विरागजी शास्त्री जबलपुर, पं. बी.जी. श्रीपाल जयपुर, पं. ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई एवं विदुषी शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई के विविध विषयों पर व्याख्यान हुए।

प्रशिक्षण कक्षायें ह्न बालबोध प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक एवं शिक्षण पद्धति की मुख्य कक्षा पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के निर्देशन में पण्डित कोमलचन्दजी द्रोणगिरि तथा पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा द्वारा रोचक शैली में ली गई। प्रवेशिका प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली व शिक्षण पद्धति की कक्षा पण्डित कोमलचन्दजी द्रोणगिरि ने ली।

प्रशिक्षण अभ्यास कक्षाओं में ह्न डॉ.नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर, पं. नरेन्द्रजी जैन जबलपुर, पं. सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, पं. संजयजी राऊत कचनेर, पं. अभयजी शास्त्री बदरवास, पं. अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ़, पं. धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर, पं. प्रवीणजी शास्त्री जयपुर, श्रीमती राजकुमारीबेन जयपुर, श्रीमती लताजी जैन देवलाली एवं श्रीमती रंजनाजी बंसल अमलाई का सराहनीय सहयोग रहा।

विभिन्न कक्षायें ह्न नयचक्र की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, **गुणस्थान विवेचन** एवं **ज्ञानधारा कर्म धारा** की कक्षा ब्र. यशपालजी जैन, **द्रव्य संग्रह** की कक्षा पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, **छहढाला** की कक्षा डॉ. नरेन्द्रकुमारजी जयपुर एवं **लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका** की कक्षा पण्डित सुनीलजी जैनापुरे ने ली।

प्रात: 5 बजे **प्रौढ़ कक्षा** में विविध विद्वानों के प्रवचनों का लाभ साधर्मियों को मिला।

बालवर्ग की कक्षाओं का संचालन श्रीमती शुद्धात्मप्रभा टड़ैया के निर्देशन में हुआ; जिसमें लगभग 90 छात्र सम्मिलित हुये। ज्ञातव्य है कि अभ्यास कक्षायें हिन्दी एवं मराठी भाषाओं में संचालित होती थी।

विमोचन : प्रवचनसार (मूल), प्रवचनसार अनुशीलन भाग–2, छहढाला का सार, ज्ञानधारा–कर्मधारा, बुधजन सतसई, समाधि–साधना और सल्लेखना, जैन कलर बुक भाग–1 व 2, मुझमें भी एक दशानन रहता है आदि पुस्तकों का विमोचन गणमान्यों द्वारा किया गया।

प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन ह्न शुक्रवार, दिनांक 25 मई को प्रात: पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर की अध्यक्षता एवं डॉ. हुकमचन्दजी

(शेष पृष्ठ 5 पर.....)

ग्रीष्मावकाश में बाल संस्कार शिविरों की धूम

1. इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ श्री दि. जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट के तत्त्वावधान में साधना नगर स्थित श्री पंचबालयति जिनालय में जैनत्व बाल संस्कार शिविर का आयोजन दिनांक 6 से 13 मई, 07 तक किया गया।

शिविर में प्रतिदिन प्रात: अभिषेक, पूजन के पश्चात् बालबोध पाठमाला भाग–1, 2, 3, वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग–1, 2 एवं लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका की कक्षाओं का सफल आयोजन किया गया।

कक्षायें श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के विद्वान पण्डित अशोकजी मांगुलकर राघौगढ, पण्डित रितेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित वीरेन्द्र जैन, पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल इन्दौर, पण्डित विक्रान्तजी पाटनी झालरापाटन, पण्डित अंचलप्रकाशजी जैन ललितपुर, पण्डित अंकुर शास्त्री देहगांव, पण्डित रोहन रोटे बाहूबली, पण्डित निपुण जैन टीकमगढ, पण्डित सचिन जबेरा, पण्डित धीरज जबेरा, पण्डित अमित भोपाल, पण्डित अर्पित जैन बडामलहरा, पण्डित जितेन्द्र शास्त्री मुम्बई, पण्डित विवेक जैन पिडावा, पण्डित अभिषेक जैन केलवाडा, पण्डित चैतन्य जैन बकस्वाहा, पण्डित नितिन जैन खडैरी, पण्डित अंकित जैन कोलारस, पण्डित तन्मय खनियांधाना, पण्डित रविन्द्र महाजन, पण्डित राहुल जैन दमोह एवं पण्डित अभिषेक जैन मडदेवरा ने लीं।

शिविर में 1000 से भी अधिक बालक–बालिकाओं ने लाभ लिया तथा 750 बच्चों द्वारा जैन धर्म के विविध स्वरूपों पर चित्रकला की प्रदर्शनी लगाई गई। अन्तिम दिन छात्रों की परीक्षा ली गई।

समापन समारोह की अध्यक्षता श्री मनोहरलालजी काला ने की तथा उत्तीर्ण छात्रों को पुरस्कार वितरण पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा के करकमलों से प्रदान किया गया। समारोह का संचालन श्री विजयजी बड़जात्या व आभार प्रदर्शन श्री राजेशजी काला ने किया। शिविर की विभिन्न व्यवस्थाओं में ट्रस्ट के कार्यकारिणी सदस्यों का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

2. ओढ़ोव (अहमदाबाद–गुज.) : यहाँ चैतन्यधाम में स्व. श्रीमती वनिता बेन सोमचन्द रेवचन्द मेहता परिवार फतेपुर के सौजन्य से धर्मरत्न पण्डित श्री बाबूभाई मेहता अभिनन्दन स्मृति तत्त्वज्ञान प्रचार–प्रसार ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 27 अप्रैल से 4 मई, 07 तक बाल शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन श्री मणिबेन चिमनलाल दोशी मुम्बई के करकमलों से हुआ।

शिविर में पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित दीपकभाई कोटडिया अहमदाबाद, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित सुरेन्द्रजी जैन उज्जैन, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित वैभव जैन, सुमित जैन, पण्डित अकलंक जैन मंगलायतन आदि विद्वानों द्वारा शिक्षण कक्षायें ली गई।

प्रतिदिन प्रात: प्रार्थना, पूजन के पश्चात् विभिन्न कक्षायें तथा सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। उत्तीर्ण समस्त परीक्षार्थियों को प्रमाण–पत्र व पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

दिनांक 27 अप्रैल को ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के निर्देशन में नवीन जिनमंदिर, वेदी शिलान्यास एवं शिखर शिलान्यास का कार्यक्रम सम्मेदशिखर विधान पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आपके मार्मिक प्रवचन का लाभ भी समाज को मिला।

कार्यक्रम श्री अमृतभाई चुन्नीलाल मेहता के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

3. देवलाली : यहाँ पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली के तत्त्वावधान में श्री दि. जैन मुमुक्षु समाज बृहन्मुम्बई के अन्तर्गत श्री अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन जबेरी बाजार द्वारा आयोजित नौवाँ आध्यात्मिक बाल संस्कार शिविर दिनांक 22 अप्रैल से 29 अप्रैल, 07 तक सम्पन्न हुआ।

शिविर में पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, पण्डित ऋषभजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित उदयमणीजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित मनीशजी शास्त्री बरेली, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री नासिक, पण्डित करणजी शाह बडौदा, पण्डित प्रकाशजी शास्त्री गोवर्धन, पण्डित सेजलजी शास्त्री सिंगोडी, ब्र. चेतनाबेन देवलाली, कु. ज्ञप्ति जैन देवलाली द्वारा विभिन्न कक्षायें लीं गई।

शिविर का उद्घाटन एवं झण्डारोहण श्रीमती उषाबेन प्रभुदासजी कामदार तथा श्रीमती भारतीबेन भायाणी के करकमलों से किया गया।

4. राजकोट (गुज.) : यहाँ आध्यात्मिक बाल संस्कार शिविर एवं व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित राकेशजी शास्त्री, अलीगढ़ के समयसार परमागम पर मार्मिक प्रवचन हुए।

संस्कार शिविर का सफल संचालन श्रीमती स्वर्णलता जैन अलीगढ़ एवं स्थानीय विद्वान श्री सुनीलजी जैनापुरे के निर्देशन में किया गया।

(प्रशिक्षण शिविर समाचार, पृष्ठ 4 का शेष ...)

भारिल्ल के मुख्यातिथ्य में प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री प्रकाशभाई हेक्कड मुम्बई एवं श्री शांतिभाई शाह उपस्थित थे। सम्मेलन में 15 प्रशिक्षणार्थियों ने अपने विचार व्यक्त किये। संचालन श्रीमती श्रुति गिड़िया खैरागढ़ एवं शाश्वत जैन शहडोल ने तथा आभार प्रदर्शन पं. धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर ने किया।

दीक्षान्त एवं समापन समारोह ह्न दिनांक 25 मई को रात्रि में आयोजित दीक्षान्त एवं समापन समारोह की अध्यक्षता डॉ. भारिल्ल ने की। मुख्यअतिथि श्री नरेशजी जैन नागपुर एवं सुमनभाई दोशी थे।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल के दीक्षांत भाषण के पश्चात् पण्डित कोमलचन्दजी जैन द्रोणगिरि एवं पण्डित कमलचंदजी जैन पिड़ावा ने प्रशिक्षण कक्षाओं की रिपोर्ट एवं परीक्षा–परिणाम प्रस्तुत किया तथा डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया ने बाल कक्षाओं के 90 छात्रों की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

बालबोध प्रशिक्षण में **प्रथम स्थान** कु. दीप्ति जैन खनियांधाना, **द्वितीय स्थान** शाश्वत जैन शहडोल एवं कु. परिणति जैन सोनगढ़ तथा **तृतीय स्थान** आगम जैन रांझी ने प्राप्त किया।

प्रवेशिका प्रशिक्षण में **प्रथम स्थान** श्रीमती श्रुति–अभय जैन खैरागढ़, **द्वितीय स्थान** जयेश जैन उदयपुर एवं **तृतीय स्थान** तपिश जैन उदयपुर, राहुल जैन नौगाव व अनिल जैन खनियांधाना ने प्राप्त किया। सभी उत्तीर्ण प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण–पत्र एवं ग्रन्थ भेंट कर पुरस्कृत किया गया।

समारोह का कुशल संचालन पं. धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर ने किया।

तत्त्वचर्चा

छहढाला का सार ०८

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे)

अब संवर-निर्जरा और मोक्ष तत्त्वसंबंधी भूल की बात करते हैं ह्न

बेचारे सन्तों को कितनी तकलीफ है, हम तो घरों में ए. सी. में बैठे हैं, चार-चार बार खा रहे हैं, पी रहे हैं। टी. वी. देख रहे हैं और वे तो बेचारे आहार भी दिन में एक बार निरन्तराय मिला तो मिला, नहीं तो निराहार। वन में डांस हैं, मच्छर हैं, कितनी तकलीफें हैं। इसप्रकार हम उन्हें बहुत दु:खी मानते हैं और अपने को बहुत सुखी मानते हैं।

अब हम शास्त्रीय दृष्टि से देखें तो पहले गुणस्थानवाले सुखी हैं या चौथे गुणस्थानवाले, चौथे गुणस्थानवाले ज्यादा सुखी हैं या पाँचवें गुणस्थानवाले, पाँचवें गुणस्थानवाले ज्यादा सुखी हैं या छठवें-सातवें गुणस्थानवाले ?

अब यदि आप पहले गुणस्थान में हो तो फिर आपके दु:खों का कहना ही क्या है। मान लो सम्यग्दृष्टि भी हो तो भी तुम से वे मुनिराज असंख्यगुणे सुखी हैं और तुम्हें वे दु:खी दिख रहे हैं। तुम उनसे अनन्त गुणे दु:खी हो और तुम खुद को सुखी मान रहे हो। क्या यह संवरतत्त्वसंबंधी भूल नहीं है, निर्जरातत्त्वसंबंधी भूल नहीं है ?

आतमहित हेतु विराग ज्ञान, ते लखैं आपको कष्टदान।
रोकी न चाह निज शक्ति खोय, शिवरूप निराकुलता न जोय।

जो वैराग्य और ज्ञान आत्मा के हित के हेतु हैं, उन्हें कष्ट देनेवाला मानता है। इच्छाओं का निरोध तो नहीं करता, अपितु उनकी पूर्ति में सुख मानता है और निराकुलतारूप जो मोक्षसुख है; उसे जानता नहीं है।

बाप बेटे को समझाता है ह्न बेटा ! अभी तकलीफ भोग लोगे तो फिर सुख पाओगे। अभी सुख भोगोगे तो बाद में दु:खी हो जाओगे। तकलीफ उठा लोगे अर्थात् रातभर ध्यान से पढ़ोगे-लिखोगे और बड़े ऑफिसर बन जाओगे तो जिंदगी भर सुख पाओगे। यह पढ़ना-लिखना क्या दु:ख पाना है और आफिसर बनकर पाँचों इन्द्रियों की भोगसामग्री पाना क्या सुख पाना है ?

बीज डालोगे दु:ख का और होगा सुख। इसीप्रकार बीज डालोगे सुख का और होगा दु:ख। क्या कभी ऐसा भी हो सकता है ?

अरे भाई ! जो अभी पढ़ने में आनन्द महसूस करेगा, वही अच्छे अंक पायेगा और उसे ही भविष्य में अनुकूलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति पढ़ाई में क्लेश अनुभव करता है; उसे न तो अच्छे अंक मिलते हैं और न भविष्य में अनुकूलता ही प्राप्त होती है।

जो मुनिराज वर्तमान प्रतिकूलताओं में भी अपने अतीन्द्रिय आनन्द का अनुभव करेंगे; वे ही भविष्य में अनंत अतीन्द्रिय आनन्द प्राप्त करेंगे।

जो व्यक्ति मुनिदशा को क्लेशरूप मानते हैं; वे संवर-निर्जरातत्त्व को सही नहीं समझते। वे लोग आत्मा के आश्रय से इच्छाओं को तो रोकते नहीं हैं और निराकुलता लक्षण मोक्ष को भी नहीं पहिचानते हैं।

यह अज्ञानी जीव संसार के सुख से अनन्त गुणा सुख मोक्ष में मानता है; पर यह नहीं जानता कि संसार में सुख है ही नहीं तो फिर संसार के सुख से अनन्त गुणा का क्या अर्थ है ? शून्य में कितने का भी गुणा करो, अन्त में परिणाम तो शून्य ही आता है न।

स्वर्ग में कम से कम ३२ देवांगनाएँ होती हैं; इसलिए वे सुखी हैं और चक्रवर्ती को ९६००० पत्नियाँ होती हैं, इसलिए वे सुखी हैं। यदि मोक्ष में भी इसी से अनन्त गुणा सुख मानना है तो सिद्ध भगवान के कितनी पत्नियाँ माननी होगी ? अरे भाई ! मोक्ष में इन्द्रियसुख संबंधी सुख नहीं है। अत: इस गुणनफल के व्यर्थ के व्यायाम से क्या लाभ है ?

इसप्रकार सातों तत्त्वों सम्बन्धी अज्ञान-अश्रद्धा अग्रहीत मिथ्याज्ञान और अगृहीत मिथ्यादर्शन है।

यह मिथ्यात्व अनादि का है। यह किसी कुगुरु ने हमें नहीं सिखाया है कि लड्डू खाने में मजा आता है। अनादि काल से हमारी पाँच इन्द्रियों के भोगों में सुखबुद्धि है।

वस्तुत: बात यह है कि कोई व्यक्ति कुदेव, कोई शास्त्र कुशास्त्र और कोई व्यक्ति कुगुरु नहीं है; अपितु अदेव में देवबुद्धि, अशास्त्र में शास्त्रबुद्धि और अगुरु में गुरुबुद्धि ही कुदेव, कुशास्त्र और कुगुरु हैं।

जो वीतरागी-सर्वज्ञ नहीं हैं, वे सच्चे देव नहीं हैं; इसलिए अदेव हैं; जो सर्वज्ञ की वाणी के अनुसार नहीं हैं और वीतरागता के पोषक नहीं हैं, वे अशास्त्र हैं और जो सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र से सम्पन्न नहीं हैं, वे अगुरु हैं। इन अदेवों, अशास्त्रों और

अगुरुओं को देव, शास्त्र, गुरु मानना ही क्रमश: कुदेव, कुशास्त्र और कुगुरुसंबंधी मान्यता है।

अदेव को देव मानना ही कुदेवसंबंधी मिथ्या मान्यता है। इसीप्रकार अगुरु को गुरु मानना कुगुरुसंबंधी मिथ्या मान्यता है।

एक अध्यापक अंग्रेजी पढ़ाता है, उसे भी गुरुजी कहते हैं और महाराष्ट्र में तो हर अध्यापक को गुरुजी कहते हैं। गोपालदासजी बरैया को भी गुरुजी कहा जाता था। उन्हें तुम देव–शास्त्र–गुरु वाला गुरु मान लो तो तुम्हारी मान्यता कुगुरु हो गई।

आज से ५० वर्ष पूर्व सन् १९५६ में लिखी गई देव–शास्त्र–गुरु पूजन की जयमाला में मैंने गुरु का स्वरूप इसप्रकार प्रस्तुत किया है ह्न

दिन–रात आत्मा का चिंतन, मृदु संभाषण में वही कथन।
निर्वस्त्र दिगम्बर काया से भी प्रगट हो रहा अन्तर्मन।।
निर्ग्रन्थ दिगम्बर सद्ज्ञानी स्वातम में सदा विचरते जो।
ज्ञानी ध्यानी समरससानी द्वादश विधि तप नित करते जो।।
चलते–फिरते सिद्धों से गुरु चरणों में शीश झुकाते हैं।
हम चले आपके कदमों पर नित यही भावना भाते हैं।।

जैन गुरु तो दिन–रात आत्मा के चिन्तन में मग्न रहते हैं और कोमल–मधुर वाणी में उक्त आत्मा का ही प्रतिपादन करते हैं।

तात्पर्य यह है कि मुनिराज निरन्तर चिन्तन भी आत्मा का ही करते हैं और जब बोलते हैं तो प्रतिपादन भी भगवान आत्मा का ही करते हैं। उनके सम्पूर्णत: निर्वस्त्र नग्न दिगम्बर शरीर से भी उनके अन्तर्मन की पवित्रता प्रगट होती है।

चौबीस परिग्रहों से रहित वे दिगम्बर संत सम्यग्ज्ञानी तो हैं ही; साथ में निरन्तर अपने आत्मा में विचरण करते रहते हैं। तात्पर्य यह है कि वे आत्मध्यान में ही मग्न रहते हैं। ऐसे ज्ञानी, ध्यानी संत समतारूपी रस से सराबोर रहते हैं और बारह प्रकार के तपों को तपते रहते हैं।

वे गुरुराज एक प्रकार से चलते–फिरते सिद्ध ही हैं; हम उनके चरणों में अपना मस्तक झुकाते हैं और निरन्तर यही भावना भाते हैं कि हम सदा आपके चरणचिह्नों पर चलते रहें, आपका ही अनुकरण करते रहें। इसप्रकार वीतरागी सर्वज्ञ देव, उनकी वाणी के प्रतिपादक शास्त्र और उस वाणी का अनुसरण करनेवाले निर्ग्रंथ गुरु ही देव–शास्त्र–गुरु हैं।

रागी–द्वेषी अल्पज्ञ देव, उनकी वाणी और उनके बताये रास्ते पर चलनेवाले गुरु ही कुदेव, कुशास्त्र और कुगुरु हैं।

कुदेव–कुगुरु–कुशास्त्र के निमित्त से जो हमारी सात तत्त्वों के विषय में भूल होती है, उसको बोलते हैं गृहीत मिथ्यात्व और जो अनादि कालीन भूल है; वह है अगृहीत मिथ्यात्व।

इसीप्रकार राग–द्वेष पोषक शास्त्रों को सही मानकर उनका अभ्यास करना गृहीत मिथ्याज्ञान है और सात तत्त्वसंबंधी मिथ्या श्रद्धा से रहित ज्ञान अगृहीत मिथ्याज्ञान है।

अब अगृहीत मिथ्याचारित्र की बात करते हैं ह्न

इन जुत विषयनि में जो प्रवृत्त।
ताको जानो मिथ्या चारित्र।।

उक्त अगृहीत मिथ्यात्व सहित पंचेन्द्रिय विषयों में प्रवृत्ति अगृहीत मिथ्याचारित्र है।

लोग कहते हैं कि पाँच इन्द्रियों के विषयों में प्रवृत्ति का नाम अगृहीत मिथ्याचारित्र है।

इस पंक्ति में एक शब्द आया है ह्न 'इन जुत' इसका अर्थ क्या है ? इसपर कोई ध्यान नहीं देता है। इसका अर्थ है कि मिथ्या–दर्शन, मिथ्याज्ञान के साथ में होनेवाली पाँच इन्द्रियों के विषयों में प्रवृत्ति अगृहीत मिथ्याचारित्र कहलाती है। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान हो और विषयों की प्रवृत्ति हो तो वह अगृहीत मिथ्याचारित्र नहीं है।

सम्यग्दृष्टि की जो पाँच इन्द्रियों के विषयों में प्रवृत्ति है, उसका नाम अगृहीत मिथ्याचारित्र नहीं, असंयम है।

यदि सम्यग्दृष्टि धर्मात्माओं की पंचेन्द्रिय विषयों में प्रवृत्ति को मिथ्याचारित्र मानेंगे तो फिर भरतचक्रवर्ती, सौधर्मादि इन्द्र और गृहस्थ अवस्था में स्थित राजा ऋषभदेव आदि को भी अगृहीत मिथ्याचारित्र–वाला मानना होगा, जो कदापि संभव नहीं है।

अब गृहीत मिथ्याचारित्र की बात करते हैं ह्न

जो ख्याति लाभ पूजादि चाह।
धरि करन विविध विध देहदाह।।

अपनी प्रसिद्धि के लिए, लौकिक लाभ, प्रतिष्ठा, सम्मान आदि की चाह से व्रतादिक का पालन करना, धर्म के नाम पर शरीर को कष्ट देनेवाली अनेक क्रियायें करना गृहीत मिथ्या–चारित्र है।

इसतरह से गृहीत मिथ्यादर्शन–ज्ञान–चारित्र और अगृहीत मिथ्यादर्शन–ज्ञान–चारित्र का निरूपण छहढाला की दूसरी ढाल में किया है और यह बताया कि ये ही इस जीव के दु:खों का कारण हैं।

अब तीसरी ढाल में इन दु:खों से छूटने का उपाय बतायेंगे। ●

२ जून २००७, मूल्य : २/- आर. एन. आई. ३११०९/७७ RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

शिलान्यास सम्पन्न

पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली के अन्तर्गत देवलाली स्थित परमागम मन्दिर के हॉल के विस्ताराधीन नवनिर्मित जिनायतन (हॉल) का शिलान्यास समारोह रविवार दिनांक 13 मई को स्व. श्री बालचन्दभाई कस्तूरचन्दजी शाह के पौत्र जिग्नेशभाई शाह (CEO MCX LTD.) सुरेन्द्र नगर निवासी हाल मुकाम ठाणा के कर कमलों से सानन्द सम्पन्न हुआ।

शिलान्यास समारोह ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में हुआ। इस अवसर पर श्री सम्मेद शिखर विधान का आयोजन किया गया।

जिनवाणी साज-सज्जा प्रतियोगिता

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, आचार्य कुन्दकुन्द नैतिक शिक्षा समिति एवं महिला मण्डल फिरोजाबाद के तत्त्वावधान में श्रुत पंचमी के पावन अवसर पर जिनवाणी साज-सज्जा प्रतियोगिता का आयोजन विशाल स्तर पर किया जा रहा है। इसमें पूरे देश के साधर्मी उत्साह पूर्वक भाग ले सकते हैं। प्रतियोगिता में सम्मिलित होने के नियम निम्नानुसार हैं ह्न

1. प्रत्येक प्रतियोगी को रजिस्ट्रेशन नं. दिया जायेगा। बिना रजिस्ट्रेशन के किसी को भी प्रतियोगिता में शामिल नहीं किया जायेगा। रजिस्ट्रेशन नं. प्राप्त करने के लिये मोबाईल नं. 09412721921 एवं 09897878744 पर सम्पर्क करें। 2. जीर्ण-शीर्ण जिनवाणी को व्यवस्थित करके लाने पर विशेष महत्व दिया जायेगा। 3. सुसज्जित जिनवाणी हमारे कार्यालय में दिनांक 21 जून, 07 तक पहुँच जानी चाहिये।

प्रतियोगिता के संयोजक पण्डित विपिन जैन शास्त्री एवं पण्डित सौरभ जैन हैं। समापन समारोह दिनांक 24 जून, 07 को ब्र. सुमतप्रकाशजी के सान्निध्य में श्री छदामीलाल दि. जैन धर्मशाला फिरोजाबाद में किया जायेगा।

कार्यालय ह्न पण्डित सौरभ जैन शास्त्री, द्वारा सन्तोष जैन एण्ड को., 88 हनुमान गंज, (ब्रह्मण धर्मशाला के पास), फिरोजाबाद (उ.प्र.)

स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

डॉ. पीयूष त्रिवेदी (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

समय : सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रात: 8 से 12 बजे तक

नोट-एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक नि:शुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।

श्रुतपंचमी के अवसर पर ... इतना करें..

दिनांक 19 जून, 07 को आनेवाले श्रुतपंचमी महापर्व के अवसर पर जिनवाणी माँ की सुरक्षा के प्रति जागरुकता हमारा परम कर्तव्य है। कहीं ऐसा न हो कि हमारी लापरवाही हमारे इस वैभव को नष्ट कर दे और आने वाली पीढ़ियाँ हमें दोषी ठहराये। आप इस दिशा में यह कर सकते हैं ?

सर्व प्रथम उपलब्ध पाण्डुलिपियों को खाकी कागज में लपेटकर लाल पापलीन के धुले हुये वेष्ठन में सुरक्षित रखें।

यदि आप इसमें हमारा सहयोग चाहते हैं तो ह्न

1. उपलब्ध पाण्डुलिपियों की सूची हमें भेजें। 2. हमारे यहाँ से सूचियाँ बनाने के लिये आने वाले विद्वानों का सहयोग करें। 3. उन पाण्डुलिपियों को सुरक्षित करने के लिये हमारे पास भेजें, जिन्हें सुरक्षित करके हम आपको वापिस भेज देंगे। 4. सभी पाण्डुपिलियों को स्केन कराकर सी.डी. बनाकर सुरक्षित कराने का प्रयास करें।

यह कार्य तीर्थधाम मंगलायतन एवं सत्श्रुत प्रभावना ट्रस्ट भावनगर के संयुक्त तत्त्वावधान में पूरे देश में हो रहा है। यदि आप भी अपने शास्त्र भण्डार में स्थित पाण्डुलिपियों को सुरक्षित कराना चाहते हैं तो निम्न पते पर सम्पर्क करें। ह्न पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र, मंगलायतन, आगरा-अलीगढ़ मार्ग, सासनी-204216 हाथरस (उ.प्र.)

आवेदन पत्र शीघ्र भेजें

रत्नत्रय तीर्थ ध्रुवधाम बांसवाड़ा में संचालित आचार्य अकलंक देव जैन न्याय महाविद्यालय में प्रवेशेच्छुक छात्र दिनांक 7 जून, 2007 तक आवेदन पत्र भरकर शीघ्र ही जमा करावें।

महाविद्यालय में प्रवेश हेतु प्रवेश पात्रता शिविर दिनांक 10 से 17 जून, 07 तक उदयपुर में आयोजित किया जायेगा।

ह्न निलय शास्त्री

रत्नत्रयतीर्थ ध्रुवधाम, मु.पो. कूपड़ा, जिला-बांसवाड़ा (राज.)

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.

प्रबन्ध सम्पादक : **पं.संजीवकुमार गोधा**,डबल एम.ए.जैनविद्या व धर्मदर्शन; इतिहास, नेट, एम.फिल एवं **पं. जितेन्द्र वि.राठी**, साहित्याचार्य

प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -

ए- ४ बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)

फोन : (०१४१) २७०५५८१, २७०७४५८

फैक्स : (०१४१) २७०४१२७